

---

grahadyAnam

ग्राह्याणम्

Document Information

---

Text title : grahadyAnam

File name : grahadyAnam.itx

Category : navagraha, dhyAnam

Location : doc\_z\_misc\_navagraha

Transliterated by : PSA Easwaran

Proofread by : PSA Easwaran

Description-comments : Devi book stall, Kodumgallur, Kerala

Source : Sthothra Rathnaakaram, edited by N. Bappuravu, 2010

Latest update : August 6, 2016

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

September 17, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

---

# grahadhyAnam

---

## अडध्यानम्

---



यन्द्रध्यानम् ।

कर्पूरस्फुटिकावदातमनिशं पूर्णोद्दुग्धिम्भाननं  
मुक्तादामविभूषितेन वपुषा निर्मूलयन्तं तमः ।  
उस्ताभ्यां कुमुदं वरं य दधतं नीलालकोद्भासितं  
स्वस्याङ्गुस्थमृगोदिताम्रयगुणं सोमं सुधाब्धिं भजे ॥

कुजध्यानम् ।

विन्ध्येशं अडदक्षिणप्रतिमुष्णं रक्तत्रिकोणाकृतिं  
दोर्भिः स्वीकृतशक्तिशूलसगदं याउठमेषाधिपम् ।  
भारद्वाजमुपात्तरक्तवसनच्छत्रश्रिया शोभितं  
मेरोर्दिव्यगिरेः प्रदक्षिणकरं सेवामडे तं कुजम् ॥

बुधध्यानम् ।

आत्रेयं मडदाधिपं अडगणस्थेशानभागस्थितं  
बाणकाकारमुदङ्गुष्णं शरलसत्पूणीरबाणसन्म् ।  
पीतस्रगवसनद्वयध्वजस्थच्छत्रश्रिया शोभितं  
मेरोर्दिव्यगिरेः प्रदक्षिणकरं सेवामडे तं बुधम् ॥

गुरुध्यानम् ।

रत्नाष्टापदवस्त्रराशिममलं दक्षात्किरन्तं करा-  
दासीनं विपणौ करं निदधतं रत्नादिराशौ परम् ।  
पीतालेपनपुष्पवस्त्रमभिलाङ्कारसम्भूषितं  
विद्यासागरपारगं सुरगुरुं वन्दे सुवर्षाप्रभम् ॥

शुक्रध्यानम् ।

श्वेताम्भोजनिषण्णामापाणतटे श्वेताम्भरालेपनं  
नित्यं भक्तजनायसम्प्रददतं वासो मणीन् डाटकम् ।  
वामेनैव करेण दक्षिणकरे व्याभ्यानमुद्राङ्कितं

शुद्धं दैत्यवराचितं स्मितमुष्णं वन्दे सिताङ्गप्रभम् ॥

शनीश्वरध्यानम् ।

ध्यायेन्नीलशिलोव्ययद्युतिनिभं नीलारविन्दस्रगं

देवं दीप्तविशाललोचनयुतं नित्यक्षुधाङ्कोपिनम् ।

निर्मासोदरशुष्कदीर्घवपुषं रौद्राङ्गुतिं भीषणं

दीर्घस्मश्रुजटायुतं ग्राहपतिं सौरं सदाहं भजे ॥

Proofread by PSA Easwaran

---



*grahadhyAnam*

pdf was typeset on September 17, 2023



Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

